



DR. ASAVADI PRAKASA RAO

Dr. Asavadi Prakasa Rao is an Indian poet, critic, translator and scholar, who is known for his poetry and prose works. Coming of a lower middle-class SC (Madiga) community from a remote village in the backward Rayalaseema region of Andhra Pradesh, Dr Asavadi Prakasa Rao has, by overcoming the disadvantages of his origin, carved a niche for himself in the realms of literature, education and social service with a positive, eclectic, and harmonising attitude. He is the only traditional Telugu poet and Ashtavadhani – expert in the traditional demonstrative feat of extemporisation and memorisation of metrical poetry – in the entire country from the SC community.

2. Born on 2nd August, 1944, Dr Asavadi Prakasa Rao post-graduated in Telugu and served as a lecturer and principal in Government degree colleges. His literary output comprises of 60 books across genres, and 49 research papers. His life and work has influenced many literati, with 22 critical books and 60 articles published on him, including a doctoral thesis, and 14 books dedicated to him.

3. Dr. Prakasa Rao's books include: (a) Sant Ravidas (2020); (b) Viveka Puneeta Nivedita – a poetic work on Sister Nivedita (2020); and (c) Prahlada Charitramu: Errana Potana Tulanatmaka Pariseelana (1989). He has also penned several books for TTD (Tirumala Tirupati Devasthanams). His book, Telugu Padya Kavita Prasthanam, on poetic craft was published by Telugu Akademi for 4th World Telugu Conference in 2012. He has delivered a host of talks, including 73 for AIR and Doordarshan with a thrust on traditional Indian culture and human values.

3. Dr. Prakasa Rao has been utilising his hard earned income and savings not only to propagate and rejuvenate Telugu and Sanskrit literatures and popularise classical poetry for a healthy blend of tradition and modernity but also to extend a helping hand to the needy cum meritorious students. He has striven for social harmony with a focus on Hindu Dalits and other downtrodden as office-bearer of AP Samajika Samarasata Foundation. He has set up a library at his home with free board and lodge for researchers. He has also served on the editorial board of many magazines and journals. He erected and helped erect statues of cultural icons.

4. Dr. Prakasa Rao has received numerous awards and honours. Some of the distinguished honours he received at the national level are – Balakavi (Teenage poet) title by Dr. Radhakrishnan (1963); Pragna Puraskar (2019); Dr Ambedkar Distinguished Service National Award (2018). Important state level awards include: Kopparapu Kavula Kala Peetham Puraskaram (2019); Life Time Achievement Award, Christian Sahitya Academy, Vijayawada (2018); Dr. Jnanananda Kavi Memorial Literary Award (2017); Sanatana Dharma Charitable Trust Award (2013); Distinguished Litterateur Award, Andhra Saraswata Parishat (2013); Jashuva Best Poetry Award (2013); Kalaratna Award for Eminence, Dept. of Culture, AP (2012); Avadhana Shiromani Award, Lok Nayak Foundation (2007); Gandhian Poet Award, AP Harijan Sevak Sangh (2005); Bhashabhigna Puraskar, AP Official Language Commission (2001); D Litt Honoris Causa, PS Telugu University (2000); Pushpagiri Maha Sansthanam Trust (1999); Pratibha Puraskar, PS Telugu University (1995); Distinguished Teacher Award and AP Higher Education Dept. (1992).



डॉ. आशावादि प्रकाश रावु

डॉ. आशावादि प्रकाश रावु एक भारतीय कवि, आलोचक, अनुवादक और विद्वान हैं, जो अपनी कविता और गद्य कृतियों के लिए जाने जाते हैं। आंध्र प्रदेश के पिछड़े रायलसीमा क्षेत्र के एक दूरदराज के गांव के एक निम्न मध्यम वर्गीय अनुसूचित जाति (मडिगा) समुदाय से ताल्लुक रखने वाले डॉ. आशावादी प्रकाश रावु ने अपने उद्गम स्थान के पिछड़ेपन को दूर करके, सकारात्मक, उदार और सामंजस्यपूर्ण प्रवृत्ति के द्वारा साहित्य, शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। वह पूरे देश में अनुसूचित जाति के एक मात्र पारंपरिक तेलुगु कवि तथा अष्टावधानी अर्थात छन्दबद्ध आशुकवि और पारंपरिक वाचन कला विशेषज्ञ हैं।

2. 02 अगस्त, 1944 को जन्मे डॉ. प्रकाश रावु ने तेलुगु में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और सरकारी डिग्री कॉलेजों में व्याख्याता और प्राचार्य के रूप में कार्य किया। उन्होंने विभिन्न साहित्यिक विधाओं में 60 पुस्तक और 49 शोधपत्र लिखे हैं। उनके जीवन और कृतित्व ने कई साहित्यकारों को प्रेरित किया है, जिन्होंने उन पर 22 महत्वपूर्ण पुस्तकें और 60 लेख प्रकाशित किए हैं, इनमें एक डॉक्टोरल शोधपत्र और उन्हें समर्पित 14 पुस्तकें शामिल हैं।

3. डॉ. प्रकाश रावु की पुस्तकों में शामिल हैं: संत रविदास (2020); विवेक पुनीता निवेदिता—सिस्टर निवेदिता पर एक काव्य कृति (2020) और प्रहलादा चरित्रमू: एराना पोटाना तुलनात्मक का परिशीलना (1989)। उन्होंने तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम के लिए भी कई पुस्तकें लिखी हैं। काव्य शिल्प पर रचित उनकी पुस्तक तेलुगु पद्य कविता प्रस्थानम को तेलुगु अकादमी द्वारा 2012 में आयोजित चौथे विश्व तेलुगु सम्मेलन के लिए प्रकाशित किया गया था। उन्होंने पारंपरिक भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों पर जोर देते हुए कई वार्ताएं की हैं, जिनमें आकाशवाणी और दूरदर्शन के लिए 73 वार्ताएं शामिल हैं।

3. डॉ. प्रकाश रावु अपनी मेहनत की कमाई और बचत का प्रयोग तेलुगु और संस्कृत साहित्य का प्रचार—प्रसार, पुनरुत्थान तथा परंपरा और आधुनिकता का सम्मिश्रण करने के लिए प्राचीन काव्य को लोकप्रिय बनाने और जरूरतमंद मेधावी छात्रों की मदद के लिए कर रहे हैं। उन्होंने आंध्र प्रदेश सामाजिक समरसता फाउंडेशन के पदाधिकारी के रूप में हिंदू दलितों और अन्य उत्पीड़ित लोगों पर ध्यान देते हुए सामाजिक सद्भाव के लिए कार्य किया है। उन्होंने शोधकर्ताओं के लिए अपने घर पर निःशुल्क रहने और खाने की व्यवस्था की है और एक पुस्तकालय भी बनाया है। उन्होंने कई पत्रिकाओं और जरनलों के संपादकीय बोर्ड में भी कार्य किया है। उन्होंने सांस्कृतिक विभूतियों की प्रतिमाएं स्थापित की हैं और उनकी स्थापना में मदद भी की है।

4. डॉ. प्रकाश रावु को कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें डॉ. राधाकृष्णन द्वारा बाल कवि की उपाधि (1963); प्रज्ञा पुरस्कार (2019); डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय विशिष्ट सेवा पुरस्कार (2018) आदि विशिष्ट सम्मान प्राप्त हैं। राज्य स्तरीय पुरस्कारों में कोप्पारपू कावुला कला पीठम पुरस्कार (2019); लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, क्रिश्चियन साहित्य अकादमी, विजयवाड़ा (2018); डॉ. ज्ञानानंद कवि मेमोरियल लिटरेरी अवार्ड (2017); सनातन धर्म चैरिटेबल ट्रस्ट पुरस्कार (2013); विशिष्ट साहित्यकार पुरस्कार, आंध्र सारस्वत परिषद (2013); जशुवा सर्वश्रेष्ठ काव्य पुरस्कार (2013); कलारत्न अवार्ड फॉर एमिनेंस पुरस्कार, संस्कृति विभाग, आंध्र प्रदेश (2012); अवधना शिरोमणि पुरस्कार, लोक नायक फाउंडेशन (2007); गांधीवादी कवि पुरस्कार—आंध्र प्रदेश हरिजन सेवक संघ (2005); भाषाभिज्ञ पुरस्कार, आंध्र प्रदेश राजभाषा आयोग (2001); डी लिट होनोरिस कौसा; पी एस तेलुगु विश्वविद्यालय (2000); पुष्पगिरी महा संस्थानम ट्रस्ट (1999); प्रतिभा पुरस्कार, पी एस तेलुगु विश्वविद्यालय (1995); विशिष्ट शिक्षक पुरस्कार और आंध्र प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग (1992) आदि शामिल हैं।